श्री श्री गुरु गौरांगो जयतः

श्री गुरु श्री राधारानी के प्रतिनिधि

श्री कृष्ण परम भगवान हैं। संकर्षण उनके पूर्ण विस्तारों में से एक हैं। संकर्षण के पूर्ण विस्तारों में से एक कारणोदकशायी महाविष्णु हैं। जब कारणोदकशायी महाविष्णु मोहिनी शक्ति बहिरंगा शक्ति माया पर दृष्टिपात करते हैं तो इस जगत की उत्पत्ति होती है। अपने पूर्व कर्मों से बंधे हुए अनेक प्रकार के जीव इस भौतिक जगत में होते हैं। अपने पूर्व कर्मों के कारण माया से बंधे हुए जीवो की यह अवस्था मायाबद्ध अवस्था कहलाती है। एक मायाबद्ध जीव की कितनी अवस्थाएं होती हैं? हमारे परम पूजनीय श्री श्रीमद् भक्ति विनोद ठाकुर ने इन सभी प्रश्नों का उत्तर दिया है। एक माया बद्ध जीव की पाँच प्रकार की अवस्थाएं होती हैं। दूसरे शब्दों में जीव की भौतिक जगत में बद्ध स्थिति के अनुसार ही उसकी अवस्था आच्छादित चेतन, संकुचित चेतन, मुकुलित चेतन, विकसित चेतन अथवा पूर्ण विकसित चेतन हो सकती है। अब हम श्री श्रीमद् भक्ति विनोद ठाकुर द्वारा बताई गई जीव की पांच प्रकार की अवस्थाओं को समझने का प्रयास करते हैं।

1. आच्छादित चेतन- वृक्ष, लता, तृण, पहाड़,पत्थर आदि योनि को प्राप्त हुए जीवो की चेतना पूरी तरह से आच्छादित होती है। इन्हें धर्म का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं होता और ये सुप्त अवस्था में माने जाते हैं। ये जीव कृष्ण दासत्व को भूलकर माया के जड़िय गुणों में इतने डूबे होते हैं कि इन्हें आध्यात्मिक जगत में अपने नित्य आध्यात्मिक अस्तित्व का ज़रा भी भान नहीं होता केवल अपने शरीर के छह विकारों के द्वारा इन्हें अपने अस्तित्व की नाम मात्र की समझ होती है। यह जीव की सबसे पतित अवस्था है। अहल्या, यमलार्जुन वृक्ष, सप्ततात आदि के पौराणिक इतिहास पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि कोई अति घोर अपराध करने पर ही इस तरह की पूर्णतया आच्छादित चेतन वाली अवस्था (योनि) प्राप्त होती है कृष्ण की कृपा से ही ऐसी अवस्था से मुक्ति मिलती है।

2. संकुचित चेतन - पशु-पक्षी, सरीसृप (रेंगने वाले) ,मछली जलजंतु, कीट-पतंग ये संकुचित चेतन हैं। आच्छादित चेतन वालों को प्रायः किसी भी चीज का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं होता। किंतु इसकी तुलना में संकुचित चेतन वालों का ज्ञान एवं अनुभूति उन्नत होती है। ये अपनी इच्छा अनुसार आहार,निद्रा, आत्मरक्षा आदि जैसे कार्य कर सकते हैं। अपने अस्तित्व को बचाने के लिए ये दूसरों से लड़ाई झगड़ा कर सकते हैं। अन्याय देखकर ये क्रोधित भी हो जाते हैं। इस प्रकार की ये सब चीजें संकुचित चेतन जीवों में पाई जाती हैं। इनमें केवल आध्यात्मिक जगत का ज्ञान नहीं होता। वानरों की दुष्ट बुद्धि में कुछ हद तक विचार करने की क्षमता देखी जाती है। वे यह भी सोच सकते हैं कि अभी कुछ करने पर उसका क्या परिणाम होगा? कृतज्ञता के लक्षण भी इनमें देखे जाते हैं। इनमें से कुछ जीवों को आहार की गुणवत्ता एवं महत्व का भी भी भी ज्ञान होता है। किंतु संकुचित चेतन जीव परमेश्वर प्राप्ति का प्रयास नहीं करते। इनका धर्म का ज्ञान संकीर्ण होता है। हालांकि भरत भक्त को हिरण का शरीर प्राप्त होने पर भी भगवान का तथा उनके नाम का ज्ञान था। शास्त्रों में इसका वर्णन मिलता है। यह एक विशेष उदाहरण है। किंतु सामान्य रूप से ऐसा बिल्कुल भी नहीं होता। अपने अपराध के कारण भरत को पशु योनि में जन्म मिला। अपराध होने के बाद भी भगवान की कृपा से भरत पुनःभगवत प्राप्ति के मार्ग पर चल सके।

3. मुकुलित, विकसित एवं पूर्ण विकसित चेतन - एक बद्ध जीव की तीन अवस्थाएं होती है - मुकुलित अवस्था, विकसित अवस्था एवं पूर्ण विकसित अवस्था। मानव जाति को साधारणतः पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक वह जो बिल्कुल भी नीति को नहीं मानते (नीति शून्य)। दूसरे जो नीति का पालन तो करते हैं लेकिन परम नियंता भगवान को नहीं मानते (निरीश्वर-नैतिक)। एक वो जो नीति को और भगवान को दोनों को ही मानते हैं (सेश्वर- नैतिक), एक वो जो नियम पूर्वक भक्ति साधना का अभ्यास करते हैं (साधन भक्त) और एक वे जो प्रेमा भक्ति की प्रारंभिक अवस्था में हैं (भाव भक्त)। जो मनुष्य अज्ञानता अथवा उनके ज्ञान में बदलाव आ जाने के कारण परम नियंता भगवान को नहीं मानते उन्हें नीति शून्य या निरीश्वर- नैतिक कहा जाता है । जो नीति नियमों का पालन करते हैं तथा भगवान में विश्वास रखते हैं, सेश्वर-नैतिक कहलाते हैं। जो मनुष्य शास्त्रानुसार नीति नियमों का पालन करते हुए भक्ति साधना करते हैं उन्हें साधन भक्त कहा जाता है और जो मनुष्य भगवान के प्रति प्रेमा भक्ति की प्रारंभिक अवस्था में प्रवेश कर चुके हैं उन्हें भाव भक्त कहा जाता है। यहाँ नीति शून्य और निरीश्वर नैतिक मनुष्य मुकुलित चेतन हैं। सेश्वर नैतिक और साधन भक्त विकसित चेतन हैं तथा भाव भक्त मनुष्य पूर्ण विकसित

चेतन हैं।

श्री श्रीमद् भक्ति विनोद ठाकुर के उपरोक्त विश्लेषण के अनुसार इस जगत में मनुष्य शरीर, एक जीवात्मा को मिलने वाला सर्वश्रेष्ठ शरीर है जो कि एक जीवात्मा को पूर्ण विकसित की अवस्था तक ले जाने में पूर्णतया सक्षम है। एक जीव के लिए केवल मात्र अपने स्वयं के प्रयासों द्वारा ही पूर्ण विकसित की अवस्था प्राप्त करना असंभव है। इसलिए एक जीव को सर्वप्रथम एक शुद्ध आध्यात्मिक गुरु के चरण कमलों की शरण ग्रहण करनी चाहिए (सदगुरु पद आश्रय)। एक शुद्ध आध्यात्मिक गुरु के चरण कमलों का आश्रय लेने का अर्थ इस प्रकार से है। आध्यात्मिक शिक्षाएं गुरु परंपरा के माध्यम से ही एक गुरु से शिष्य तक पहुंचती है। जब ये शिक्षाएं एक दीक्षा गुरु एवं शिक्षा गुरु से होकर एक जीवात्मा तक पहुंचती हैं तो हमें उन शिक्षाओं को हृदय से स्वीकार कर तदनुसार आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिए । दीक्षा गुरु ही शिक्षा गुरु भी हो सकते हैं । दीक्षा गुरु की अनुपस्थिति में उनके आदेश अनुसार एक शिष्य एक या एक से अधिक शिक्षा गुरु स्वीकार कर सकता है दीक्षा गुरु एवं शिक्षा गुरु की शिक्षाओं का अनुसरण करने से धीरे-धीरे हमारे साधना के लिए आवश्यक बल (साधना बल) की वृद्धि होती है । यह साधना बल पूर्ण विकसित चेतन अवस्था प्राप्त करने में हमारा सहायक है ।

यद्यपी शास्त्र हमें बताते हैं कि परम भगवान श्री कृष्ण इस संपूर्ण जगत् के गुरु (जगतगुरु) हैं लेकिन गौड़ीय मठ में श्रीमती राधारानी ही हमारी प्रथम आराध्या हैं । श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु स्वयं कृष्ण है जो कि श्रीमती राधा रानी का भाव एवं कांति लेकर आविर्भूत हुए । शास्त्रानुसार परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण सातवें मन्वंतर के 28वें चतुर्युगके कलियुग (ब्रह्मा जी का एक दिन) में श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु के रूप में प्रकट होते हैं । वे स्वयं श्रीमती राधा रानी का भाव लेकर प्रकट होते हैं इसलिए वे हमें अपने आचरण व व्यवहार द्वारा श्री कृष्ण की ही सेवा करने की शिक्षा देते हैं । कुछ लोग शास्त्रों को ठीक से समझे बिना भी श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु (श्री गौरांग महाप्रभु) को वही श्री कृष्ण मान लेते हैं जो कि अपने परमधाम गोलोक धाम वृन्दावन में नित्य लीला करते हैं । यद्यपि महाप्रभु वही परम भगवान हैं फिर भी मैं कुछ शास्त्रीय प्रमाण दे रहा हूँ जिनसे दोनों की लीलाओं का अंतर स्पष्ट हो जाएगा ।

जायध्वं जायध्वं जायध्वं न संशय: ।

कलौ संकीर्तनारम्भे भविष्यामि शचीसुतः ।। (भविष्यपुराण)

मैं कलियुग में संकीर्तन आंदोलन प्रारंभ करने के लिए श्री शचीदेवी के पुत्र के रूप में प्रकट होऊँगा । इसमें कोई संशय नहीं है।

कलिघोरतमश्छन्नान् सर्वानाचारवर्जितान ।

शची गर्भे च संभूय तारयिष्यामि नारदः ।। (वामनपुराण)

हे नारद! घोर अंधकार के युग कलियुग घोर में उचित आचरण से वंचित सभी लोगों का उद्धार करने के लिए मैं शची देवी के गर्भ से जन्म लूंगा ।

कले: प्रथमसँध्यायाम् लक्ष्मीकान्तो भविष्यति।

ब्रह्मरूपं समाश्रित्य संभवामि युगे युगे ।। (वराहपुराण)

कलियुग की प्रथम संध्या में मैं लक्ष्मीकांत (लक्ष्मी देवी के प्रिय) के रूप में प्रकट होऊँगा । तत्पश्चात मैं जगन्नाथ का आश्रय

लूंगा । इसी प्रकार मैं युग युग में प्रकट होता हूँ ।

गोलोकं च परित्यक्तवा लोकानां त्राणकारिणाम् ।

कलौ गौरांग-रूपेण लीला लावण्य विग्रहं ।। (मार्कण्डेय पुराण)

कलियुग में चमत्कारिक लीला करते हुए भौतिक जगत के लोगों का उद्धार करने के लिए मैं अपना गोलोक धाम छोड़कर (पृथ्वी पर) गौरांग रूप ग्रहण करूंगा ।

कले: प्रथमसँध्यायाम् गौरांगो ' सौमहितले ।

भागीरथी तटे भूम्नि भविष्यति सनातनः ।। (पद्मपुराण)

कलियुग की प्रथम संध्या में भागीरथी के तट पर सनातन भगवान गौरांग पृथ्वी पर प्रकट होंगे

भक्तियोग प्रदानाय लोकस्यानुग्रहाय च ।

संन्यासीरूपमाश्रित्य कृष्णचैतन्यनामाधृकः।। (बृहत-वामनपुराण)

लोगों पर अनुग्रह करने एवं उन्हें भक्ति योग प्रदान करने के लिए परम भगवान संन्यासी रूप धारण करेंगे और श्री कृष्ण चैतन्य नाम से जाने जाएंगे ।

गोपालान् परिपालयन् वृजपुरे लोकान् वहन द्वापरे ।

गौरांग: प्रियकीर्तन: कलियुगे चैतन्यनामा हरि: ।।

द्वापर युग में पृथ्वी का भार हरण करने वाले परम भगवान गोपाल कलियुग में स्वर्णिम रूप में चैतन्य नाम से प्रकट होते हैं और संकीर्तनप्रिय होते हैं ।

मैं आशा करता हूँ कि उपरोक्त वर्णन को पढ़ने के बाद पाठकों के मन में किसी प्रकार का कोई संशय नहीं रहेगा कि भगवान श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु स्वयं परम भगवान श्री कृष्ण हैं जो कलयुग में पुनः प्रकट हुए हैं ।

यद्यपि श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु स्वयं भगवान है लेकिन वे श्रीमती राधा रानी के भाव से सुवलित हैं । ऐसी अवस्था में सदा श्री कृष्ण को ही ढूंढते रहते हैं । जब श्रीकृष्ण ने वृन्दावन छोड़ा और मथुरा चले गए उसी क्षण से ही श्रीमती राधारानी विप्रलंभ भाव (कृष्ण विरह में) में डूब गईं। महाप्रभु और श्रीमती राधा रानी का महा भाव एक ही है । महाप्रभु की परंपरा में आने वाले केवल सद्गुरु ही श्रीमती राधारानी को होने वाली विरह पीड़ा का अनुभव और आस्वादन कर सकते हैं । कोई भी व्यक्ति इसी

प्रकार के विप्रलम्भ रस का आस्वादन कर सकता है लेकिन केवल एक सद्गुरु के माध्यम से । वे हमें अपने आचरण एवं उदाहरण द्वारा इससे संबंधित शिक्षाएं प्रदान करते हैं । इसलिए शास्त्रानुसार कृष्ण के जगद्गुरु होते हुए भी श्रीमती राधारानी ही गौड़ीय वैष्णव की वास्तविक गुरु हैं ।

अब हम ब्रह्मवैवर्त पुराण में श्री कृष्ण के कथनानुसार 'राधा' शब्द का अर्थ समझने का प्रयास करेंगे ।

रामं शब्दं कुर्वतस्त्रस्तो ददामि भक्तिम् उत्तमम् ।

धा शब्दं कुर्वत: पश्चाद्यामिश्रवणलोभत: ।। (70)

श्री कृष्ण कहते हैं जो राधा नाम का पहला अक्षर केवल 'रा' भी भी बोलते हैं उनको भी मैं शीघ्र ही उत्तम भक्ति प्रदान करता हूँ । फिर राधा का पूरा नाम सुनने के लोभ से मैं उस व्यक्ति के पीछे दौड़ता हूँ जब वह राधा का नाम दूसरा अक्षर 'धा' बोलता है।

ये सेवन्ते च दत्तामाम् उपचारामश्चषोडश: ।

यावज्जीवनपर्यन्तम् नित्यं भक्त्या सुसंयुता: ।। (71)

राधा नाम बोलने से एक व्यक्ति को मेरी जीवन भर षोडश उपचारों द्वारा पूजा करने से भी ज्यादा प्रेम की प्राप्ति होती है ।

याप्रीतिर्माम् जायते राधाशब्दात्ततोधिका : ।

प्रियाना मे तथाराधेराधा वक्ता ततोधिका: ।। (72)

जो मुझे अपने प्राणों से भी प्यारी हैं, जब कोई उन राधा का नाम बोलता है तो वह मेरा अति प्रिय हो जाता है ।

इसी कारण से, श्री कृष्ण का प्रेम प्राप्त करने के लिए गौड़ीय वैष्णव गण, श्रीमती राधारानी को गुरु रूप से अपने हृदय के मूल में धारण करते हैं । वे अपने दीक्षा गुरु को राधा रानी का ही प्रतिनिधि मानते हैं । इस प्रकार वे भाव भक्ति के पूर्ण विकसित चेतन की अवस्था तक पहुंचकर प्रेमा भक्ति लाभ करते हैं।

'गुरुकृपा केवलम' - अब हम शास्त्रानुसार गुरु के बारह नामों का अध्ययन करते हैं ।

प्रथमेश्च गुरुदेवं द्वितीये चैतन्यप्रद : ।

तृतीये ज्ञानदाता च चतुर्थे ईष्टदेवता : ।।

पंचमें श्री ज्ञातिनाथ: षष्ठे पतितपावन:।

सप्तमें श्रीकर्णधार: , मंत्राचार्यतथा अष्टमें ।।

नवमेंतु परब्रह्म: दशमें त्राणकारण : ।

एकादशे दीनबन्धु: द्वादशे हरिरीश्वर: ।।

श्री गुरु के बारह नाम इस प्रकार हैं -

1.गुरुदेव - पूजनीय आध्यात्मिक स्वामी (देव)

2.चैतन्यप्रद - चेतना प्रदान करने वाले

3.ज्ञानदाता - ज्ञान देने वाले

4.इष्ट देवता - मुख्य रूप से पूजनीय

5.ज्ञातीनाथ - अति प्रिय

6.पतितपावन - पतितो का उद्धार करने वाले

7.कर्णधार - जन्म मृत्यु के भवसागर से पार लगाने वाली नैया के केवट

8. मंत्राचार्य - अपने आचरण द्वारा सिखाने वाले एवं मंत्र प्रदान करने वाले

9. परमब्रह्म - परमेश्वर भगवान

10. त्राण कारण उद्धार करने वाले

11. दीनबंधु - दीनो के बंधु

12. हरिश्वर - परम नियंत्रक, श्री हरि

11.परम नियंत्रक

12.श्री हरि हरि

गुरु परंपरा के प्रत्येक निर्देश का का दृढ़ता से पालन करने वाले एवं गुरु परंपरा द्वारा नियुक्त एक शुद्ध गुरु में ये सभी शुभ लक्षण देखे जा सकते हैं ।

आज इस अवसर पर अपने परम पूजनीय मंत्रदाता गुरुदेव नित्य लीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपद पाद अष्टोत्तरशत श्री श्रीमद भक्ति प्रमोद पुरी गोस्वामी ठाकुर को नमन करता हूँ जो गुरु के उपरोक्त सभी बारह गुणों से परिपूर्ण हैं । साथ ही मैं अपने परम गुरु पाद पद्म नित्य लीला प्रविष्ट अष्टोत्तरशत श्री श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धांत सरस्वती गोस्वामी ठाकुर तथा परंपरागत सभी पूर्ववर्ती आचार्यों के चरण कमलों में दंडवत ज्ञापन करता हूँ । संपूर्ण गुरु परंपरा दूसरों में दोष ना देखने के गुणों से युक्त है इसलिए मैं प्रार्थना करता हूं कि पतित सेवक से जाने अनजाने में हुए किसी भी प्रकार के अपराध को क्षमा कर दें । आप जब तक भी इस दास को इस शरीर में रखें, अपने चरणों की छाया में ही रखें । इस सेवक को आशीर्वाद प्रदान करें कि अपनी अंतिम सांस तक श्रीमन महाप्रभु के दिव्य प्रेमा भक्ति मिशन की प्रचार सेवा करते हुए शुद्ध भक्ति का अनुपालन कर सके ।

श्रील भक्ति विबुध बोधायन